वित्तीय साक्षरता क्या, क्यों, किसे और कैसे *

के.सी.चक्रवर्ती

राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक के अध्यक्ष डॉ. प्रकाश बक्शी, संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम भारत की कंट्री डायरेक्टर सुश्री कैटलिन विजेन, माइक्रोसेव के निदेशक श्री मनोज के. शर्मा, कार्यशाला में भाग लेने आए प्रतिनिधि गण देविया और सज्जनो। जैसा कि आप सभी को ज्ञात है कि वित्तीय साक्षरता का विषय न सिर्फ भारत में बल्कि विश्व भर में नीति निर्माताओं के लिए मुख्य क्षेत्र के रूप में उभरा है। ऐसा विशेषरूप से वैश्विक वित्तीय संकट के परिणामस्वरूप हुआ है। वित्तीय साक्षरता लाने का प्रसार करने को वित्तीय समावेशन और उसके परिणामस्रूप आने वाली वित्तीय स्थितिरता के महत्त्वपूर्ण लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए मुख्य बिंदु के रूप में चिह्नित किया है। कार्यशाला बहुत प्रासंगिक है क्योंकि वित्तीय साक्षरता अभियान को आगे ले जाने के लिए आवश्यक कदम उठाने और उसे गति प्रदान करने के लिए इस कार्यशाला ने मुख्य हिस्सेदार और विचार-विमर्श कर्ताओं को एक साथ ला दिया है। आज के इस कदम के लिए मैं आयोजकों को बधाई देता हूं और उम्मीद करता हूं कि विचार-विमर्श से कुछ अर्थपूर्ण और विश्वसनीय कार्ययोजना तैयार होगी।

2. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की 1966 में शुरुआत होने के समय से ही विश्व भर में लोगों के सामाजिक उद्धार में इसका काफी असर रहा है। वर्षों के दौरान इस कार्यक्रम के अंतर्गत गरीबी में कमी लाने, प्रजातांत्रिक अभिशासन, संकट से बचाव और बहाली तथा पर्यावरण और वहनीय विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया है। यह जानकर प्रसन्नता होती है कि संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम ने भारत में सबसे गरीब लोगों की जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए सरकारी तंत्र और सिविल सोसायटी के साथ में कार्य किया है। भारत में इस कार्यक्रम का केंद्र सात अल्प विकसित राज्य रहे हैं। भारत में और विश्वभर में समावेशी वृद्धि लाना संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रमों का प्रमुख उद्देश्य रहा है। जैसा कि आप सभी जानते हैं राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक की स्थापना कृषि, ग्रामीण उद्योगों और सेवाओं को प्रोत्साहित करने और उनके विकास के लिए ऋण की सुविधा उपलब्ध कराने के अधिदेश (मेंडेट) के साथ हुई थी। वित्तीय समावेशन के प्रयासों, विशेष रूप से देश के ग्रामीण परिक्षेत्र के अंतर्गत इसने केंद्रीय भूमिका प्राप्त कर ली है। इसी प्रकार से माइक्रोसेव ने भी वित्तीय संस्थाओं, निवेशकों, दानदाताओं, कंपनियों और विनियामकों जैसे विविध प्रकार के हिस्सेदारों के साथ में सफलतापूर्वक कार्य करके 'वित्तीय सेवाओं के लिए बाजार-आधारित सुविधाएं' उपलब्ध कराने के लिए, जैसा कि इसकी कॉर्पोरेट टैगलाइन में दावा किया जाता है, वित्तीय समावेशन के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। मुझे यह जानकर खुशी हो रही है कि आज के इस सेमीनार का आयोजन तीनों संगठन संयुक्त रूप से कर रहे हैं। मैं उम्मीद करता हूं कि इस साझा प्रयास से हमारे वित्तीय समावेशन/वित्तीय साक्षरता के लिए उठाए गए कदमों के लिए सार्थक परिणाम प्राप्त होंगे।

3. यह जानकर मुझे खुशी हो रही है कि संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम और राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक के आदेश पर माइक्रोसेव ने संयुक्त राष्ट्र द्वारा ध्यान केंद्रित किए गए राज्यों में वित्तीय साक्षरता की वर्तमान स्थिति के मूल्यांकन तथा राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चलाए जाने वाले इसी प्रकार के अन्य कार्यक्रमों से संबंधित जानकारी एकत्र करने हेतु वित्तीय साक्षरता मूल्यांकन सर्वेक्षण किया है। वास्तव में बहुत कठिन परिश्रम करना ही नहीं बल्कि यह भी महत्त्वपूर्ण है कि कार्यनिष्पादन की आवधिक समीक्षा भी की जानी चाहिए क्योंकि इससे पुनः ध्यान केंद्रित करने, पुनर्विन्यास करने और मार्गस्थ सुधार करने में मदद मिलती है जो कि अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बहुत अधिक आवश्यक हैं। मुझे विश्वास है कि इस परिश्रम से प्राप्त पूरी जानकारी से संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम को महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन प्राप्त होगा उनको वर्तमान कार्यक्रमों को सरल और प्रभावी बनाने तथा लक्षित राज्यों में उनकी पहुंच और लाभार्थियों के वित्तीय व्यवहार पर उनके असर -दोनों की दृष्टि से आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी।

4. मैं आज के अपने संबोधन में वित्तीय साक्षरता के बारे में चार मूलभूत प्रश्नों के उत्तर दूंगा -

* संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी), राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) और माइक्रोसेव द्वारा 4 फरवरी 2013 को मुंबई में आयोजित 'वित्तीय साक्षरता कार्यशाला' में भारतीय रिज़र्व बैंक के उप गवर्नर डॉ. के.सी. चक्रवर्ती का संबोधन। इस भाषण को तैयार करने में श्रीमती जया मोहंती और श्रीमती पल्लवी चौहान से मिले सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया जाता है।

- वित्तीय साक्षरता की धारणा का अंतर्निहित अर्थ क्या है ?
- वित्तीय साक्षरता क्यों आवश्यक है?
- किन लोगों को वित्तीय रूप से साक्षर करने की और किन पहलुओं पर आवश्यकता है?
- और अंततः यह कि वित्तीय साक्षरता का प्रसार कैसे करें?

वित्तीय साक्षरता की धारणा का अंतर्निहित अर्थ क्या है?

5. मैं पहले प्रश्न का उत्तर देने के साथ शुरुआत करना चाहूंगा। यहां उपस्थित हम सभी लोगों के लिए वित्तीय साक्षरता कोई नया शब्द नहीं है। हम लोगों ने वित्तीय साक्षरता की बहुत सी परिभाषाएं सुनी हैं किंतु मैं आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) द्वारा दी गई परिभाषा का प्रयोग करना चाहूंगा जो वित्तीय साक्षरता को 'ठीक वित्तीय निर्णय लेने और अंततः व्यक्तिशः वित्तीय खुशहाली के लिए वित्तीय जागरूकता, ज्ञान, कौशल, नज़रिया और व्यवहारों' के रूप में परिभाषित करती है। वित्तीय साक्षरता से अपेक्षा की जाती है कि साधारण लोगों को जानकारी प्रदान करे ताकि वे वित्तीय सेवाओं के बारे में प्रश्न करने वाले प्रयोगकर्ता बन सकें। यह सिर्फ बाजार और निवेश करने के बारे में नहीं है, इसका संबंध बचत करने, बजट बनाने, वित्तीय योजना बनाने, बैंकिंग की मूलभूत जानकारी होने तथा सबसे महत्त्वपूर्ण बात 'वित्तीयरूप से चतुर होने' से है।

6. वित्तीय साक्षरता एक जटिल धारणा है और इसके पूर्ण अर्थ को समझना महत्त्वपूर्ण है। वस्तुतः हम समाज के रूप में वित्तीय साक्षरता की आवश्यकता और उसकी क्षमता को अभी समझ नहीं पाए हैं। वित्तीय मामलों की अनभिज्ञता समाज के सभी स्तरों और आर्थिक वर्गों में व्याप्त है, जिसकी व्याख्या मैं बाद में करूंगा। अनभिज्ञता की प्रकृति और इसके प्रदर्शन में अंतर हो सकता है किंतु हम में से बहुत लोगों की दैनिक वित्तीय पसंदों से इसका पता चलता है। वित्तीय उत्पादों तथा सेवाओं के बारे में मूलभूत ज्ञान तथा उनके जोखिम-प्रतिलाभ ढांचे का अभाव वित्तीय विषयों की अनभिज्ञता का एक व्यापक स्तर पर देखा जाने वाला सामान्य उदाहरण है। अधिक प्रतिलाभों का लालच आखिरकार एक संकट के रूप में परिणत होता है जिसमें अधिक संख्या में खुदरा निवेशक शामिल होते हैं। यह मूलभूत शिक्षा सिर्फ अपनी मेहनत की कमाई से बचतों को वित्तीय उत्पादों में निवेश करने वाले व्यक्तिशः निवेशकों के बारे में ही नहीं बैंकों और वित्तीय संस्थानों के बारे में भी सही है जो जनता की निधियों का प्रबंध करते हैं और उन्हें या तो निवेश करते हैं या फिर उनसे ऋण प्रदान करते हैं। इस प्रकार से वित्तीय साक्षरता के विभिन्न पहलुओं और हमारे जीवन में पड़ने वाले उनके प्रभावों को समझने में विवेकपूर्ण वित्तीय योजना बनाने तथा व्यक्तिशः और समग्र रूप से समाज के स्तर पर अधिकतम कल्याण की मूल बात निहित है।

वित्तीय साक्षरता क्यों आवश्यक है?

7. मैं अब दूसरे प्रश्न पर आता हूं : वित्तीय साक्षरता क्यों आवश्यक है? वित्तीय साक्षरता वित्तीय समावेशन और उपभोक्ता संरक्षण के साथ में एक त्रिक का निर्माण करती है जो वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है। इन तीनों का न सिर्फ वित्तीय स्थिरता से संबंध है बल्कि उनमें आपस में मजबूत अंतरसंबंध भी हैं जिनका एक दूसरे पर काफी असर पड़ता है। इस प्रकार से वित्तीय साक्षरता वित्तीय समावेशन और उपभोक्ता संरक्षण में बहुत प्रासंगिक है। वित्तीय साक्षरता के बिना हम न तो वित्तीय समावेशन और न ही उपभोक्ता संरक्षण में ज्यादा प्रगति नहीं कर सकते।

8. वित्तीय समावेशन में दो बातें अनिवार्य होती हैं, पहली सुलभता और दूसरी जागरुकता की। यह एक वैश्विक मुद्दा है और इन दोनों बातों पर अलग-अलग देशों में दिए जाने वाले तुलनात्मक जोर में अंतर होता है। विकसित देशों में वित्तीय आधारभूत संरचना के व्यापक विस्तार होने के कारण वित्तीय उत्पादों/सेवाओं तक पहुंच चिंता का विषय नहीं है। वहां पर वित्तीय साक्षरता की जरूरत अधिक होती है जिसमें बाजार के प्रतिभागियों/उपभोक्ताओं को उपलब्ध उत्पादों/सेवाओं की विशेषताओं के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता होती है जिसके अंतर्गत उनमें निहित जोखिमों और प्रतिलाभों की जानकारी भी होनी चाहिए। हालांकि भारत जैसे विकसित देशों में स्वयं उत्पादों तक सुलभता में ही कमी है। इसलिए यहां पर दोनों बातें, अर्थात सुलभता और जागरुकता पर जोर दिए जाने की आवश्यकता है और साथ ही सुलभता में सुधार लाने को अधिक प्राथमिकता प्रदान करने की आवश्यकता है।

9. नीतिगत लक्ष्य के रूप में वित्तीय स्थिरता से तात्पर्य वित्तीय संकट को टालने और साथ ही असंतुलनों के आर्थिक गतिविधियों[1] को खतरा उत्पन्न करने से पहले उनको सीमित करने, नियंत्रित करने और उनसे निपटने की वित्तीय प्रणाली की क्षमता में निहित होता है। हाल का वैश्विक वित्तीय संकट इस बात का प्रत्यक्ष उदाहरण रहा है कि वित्तीय साक्षरता की कमी

किस प्रकार से वित्तीय स्थिरता को प्रभवित करती है। संकट का उद्भव सब-प्राइम उधारकर्ताओं को अनुचित मॉर्टगेज उत्पादों की बिक्री से हुआ। इन उधारकर्ताओं ने उत्पाद की विशेषताओं को समझा ही नहीं। इस संकट को बाजार के माहिर समझे जाने वाले प्रतिभागियों द्वारा उनमें अंतर्निहित जोखिम को समझे बिना जटिल वित्तीय उत्पादों को तैयार करने से भी भड़काया गया। फैडरल रिज़र्व सिस्टम के गवर्नर बोर्ड के अध्यक्ष बेन बर्नांके ने टिप्पणी की है कि 'सबप्राइम मॉर्टगेज मार्केट में उत्पन्न हुई समस्याओं के आलोक में हमें इस बात का स्मरण हो जाता है कि कम उम्र में ही लोगों का वित्तीय साक्षर हो जाना कितना महत्त्वपूर्ण होता है ताकि वे उत्तरोत्तर जटिल हो रहे वित्तीय बाजारों में निर्णय लेने के लिए बेहतर ढंग से तैयार हो सकें।'[2]

10. जैसा कि पहले ही नोट किया गया है, वित्तीय साक्षरता में उत्पादों के उपयोगकर्ताओं और उन्हें उपलब्ध कराने वालों को वित्तीय उत्पादों से संबंधित जोखिम और प्रतिलाभ की जानकारी देना शामिल होता है। यही वह ज्ञान है जो जोखिम को रोकने और वित्तीय प्रणाली में स्थिरता बनाए रखने में मदद करता है। मैं यह तर्क प्रस्तुत करना चाहूंगा कि जानकारी होने पर बाजार के प्रतिभागियों से यह अपेक्षा की जाती है कि अपनी जोखिम लेने की मूलभूत योग्यता को ध्यान में रखते हुए अपने लोभ को नियंत्रित करेंगे।

11. उपभोक्ता संरक्षण के लिए वित्तीय साक्षरता एक अनिवार्य पूर्व-शर्त है। पारदर्शिता की कमी होने और परिणामस्वरूप सूचनाओं के विशाल परिमाण से सूक्ष्मताओं की पहचान करने और समझने में उपभोक्ताओं की असमर्थता के कारण वित्तीय मध्यथों और उपभोक्ता के बीच उपलब्ध सूचनाओं की भिन्नता हो जाती है। इस संदर्भ में वित्तीय शिक्षा होने से सूचना के इस अंतर को कम करने में उपभोक्ता की बड़ी सहायता हो सकती है। बैंक रहित जनसंख्या का विश्वास जीतने और जानकारी होने के साथ ही शिकायत निवारण की प्रभावी प्रणाली अस्तित्व में होना उस प्रणाली, जो उन्हें जटिल और गैर-दोस्ताना वित्तीय बाजार-स्थल लगेगी, में शामिल होने के संबंध में उनकी आशंकाओं को दूर करना भी अनिवार्य है। हमारे वित्तीय समावेशन प्रयासों के माध्यम से अभी-अभी औपचारिक वित्तीय प्रणाली से जुड़े जनसंख्या समूह में उपभोक्ता संरक्षण प्रणाली के बारे में जागरुकता बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि किसी भी प्रकार के अरुचिकर अनुभव का परिणाम यह होगा कि वे लोग वित्तीय प्रणाली से सदा के लिए अलग हो जाएंगे।

वित्तीय साक्षर होने की आवश्यकता किसे और किस प्रकार से है?

12. इसके साथ मैं वित्तीय रूप से साक्षर होने की आवश्यकता किसे है के तीसरे प्रश्न पर आता हूं। मेरा तर्क है कि वित्तीय प्रणाली से संबद्ध प्रत्येक व्यक्ति को वित्तीय रूप से साक्षर होने की आवश्यकता है। इसमें वित्तीय सेवाओं के सभी उपयोगकर्ता, चाहे वे वित्तीय रूप वंचित संसाधन विहीन लोग हों, निम्न और मध्यम आय समूह हों या फिर उच्च निवल आय वाले लोग हों; सेवा प्रदाता हों और चाहे वे नीति निर्माता या विनियामक हों सभी शामिल हैं।

13. हासिया में रहने वाले संसाधन-विहीन लोगों पर लगातार वित्तीय दबावों के कारण अधिक संवेदनशीलता हो सकती है। कठिन परिस्थितियों में घरेलू नगदी प्रबंध करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है जहां पर सीमित संसाधनों पर निर्भरता होती है। इस प्रकार के जनसंख्या समूहों के लिए वित्तीय साक्षरता के प्रयासों में औपचारिक वित्तीय प्रणाली का हिस्सा बनने के फायदों और अप्रत्याशित आकस्मिकताओं का सामना करने के लिए अनावश्यक कर्ज के जाल में उलझे बिना आय के अल्पकालीन उतार-चढ़ावों का प्रबंध करने की जानकारी प्रदान करना अनिवार्य रूप से शामिल होता है। एक उदाहरण प्रस्तुत है, एनसीएईआर और मैक्स न्यूयार्क लाइफ के द्वारा किए गए एक अध्ययन में दर्शाया गया है कि उच्च ब्याज दर पर साहूकारों से उधार लेने के समय सर्वेक्षण में शामिल भारत के लगभग 60 प्रतिशत श्रमिक नगद का संग्रह घर पर करते हैं। यह पैसों की बचत का एक ऐसा पैटर्न है जिससे इन श्रमिकों[3] की वित्तीय संवेदनशीलता बढ़ने ही वाली है। अलग-थलग पड़े इन वर्गों को शिक्षित करने की प्रकिया में गहरे पैठ वाली व्यावहारिक और मनोवैज्ञानिक अड़चनों को हल करना होगा जो वित्तीय प्रणाली में सहभागिता के मार्ग में प्रमुख अवरोधक हैं।

[1] गैरी सिनासि (2004) 'डिफाइनिंग फाइनैंसियल स्टेबिलिटी' आईएमएफ वर्किंग पेपर, डब्लूपी/04/187.

[2] 9 अप्रैल 2008 को वाशिंगटन डी.सी. में निजी वित्तीय साक्षरता और फैडरल रिज़र्व बोर्ड के जंप स्टार्ट कोएलिशन विषय पर संयुक्त समाचार सम्मेलन में फैडरल रिज़र्व प्रणाली के गवर्नर-बोर्ड के अध्यक्ष श्री बेन बर्नांके की टिप्पणी - 'वित्तीय शिक्षा और राष्ट्रीय जंप स्टार्ट कोएलिशन सर्वे का महत्त्व'।

14. बचतकर्ता अथवा उधारकर्ता अथवा दोनों के रूप में वित्तीय बाजारों में सहभागिता करने वाले मध्यम और निम्न आय समूहों अर्थात वित्तीय रूप से समावेशित समूहों के लिए बाजार और नए उत्पादों/सेवाओं के बारे में जानकारी बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिए। उदाहरण के लिए बैंक खाता धारण करने वाली हमारी जनसंख्या का बड़ा हिस्सा जानकारी के अभाव में पूंजी बाजार में हिस्सा नहीं लेता। ऐसे मामलों में वित्तीय साक्षरता का ध्यान पूंजी बाजार की कार्यप्रणाली के बारे में जागरुकता उत्पन्न करने के बारे ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए और साथ ही इस तथ्य के बारे में भी जागरुकता लाई जानी चाहिए कि दीर्घावधि में इक्विटी बाजार से अन्य निवेशों की तुलना में बेहतर प्रतिलाभ प्राप्त होते हैं।

15. इसी प्रकार से अधिक निवल आय वाले लोगों के लिए वित्तीय बाजारों, नए और नवोन्मेषी उत्पादों तथा लिखतों की बेहतर जानकारी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इससे उन्हें वित्तीय बाजार में उपलब्ध मार्गों का बेहतर उपयोग करने में मदद मिलती है। यह जानकारी बाजार में उनके निवेशों से अधिक प्रतिलाभ लेने और अपेक्षाकृत सस्ती दरों पर ऋण लेने के लिए भी उपयोगी भी होती है। फिर भी, चाहे बचत हो या निवेश यह मूलभूत बात ध्यान में रखना चाहिए कि 'अधिक प्रतिलाभ अधिक जोखिम को दर्शाता है'।

16. वित्तीय उत्पादों/सेवाओं का उपयोग करने वालों के लिए वित्तीय साक्षरता की जरूरत एक तथ्य है जिसे स्वीकार किया गया है किंतु मैं इस बात पर जोर देना चाहूंगा कि बैंकों, वित्तीय संस्थानों और बाजार के अन्य प्रतिभागियों को वित्तीय रूप से साक्षर करने और जोखिम तथा प्रतिलाभ के ढांचे के बारे में पूरी तरह से जागरूक होने की जरूरत है। वित्तीय सेवाएं उपलब्ध कराने वालों के लिए वित्तीय साक्षरता में उनके कारोबार और उनके द्वारा उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराए जाने वाले उत्पादों में निहित जोखिम को समझना शामिल होगा। बाजार के प्रतिभागियों के रूप में उन्हें जटिल वित्तीय उत्पादों में अंतर्निहित जोखिमों को समझने और निधियों को सौंपने के समय बुद्धिमानीपूर्वक चयन करने की आवश्यकता है। सेवा प्रदाताओं के लिए वित्तीय साक्षरता में वर्तमान और संभावना वाले ग्राहकों की जरूरतों को समझना तथा उन जरूरतों के अनुसार उत्पादों और सेवाओं का सृजन भी शामिल होता है।

17. अंततः मैं यह तर्क दूंगा कि अभिमत तैयार करने वाले और नीति निर्माताओं के लिए भी वित्तीय साक्षरता प्रासंगिक है। जनता और वित्तीय संस्थानों की आवश्यकताओं को जानने, उत्पादों और बाजारों में अंतर्निहित जोखिमों को समझने और राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक नीतिगत माहौल तैयार करने के लिए वित्तीय साक्षरता आवश्यक है। इस प्रकार के दृष्टिकोण को अपनाकर ही वित्तीय स्थिरता जोखिम को न्यूनतम करते हुए अधिक आर्थिक विकास के लिए भौतिक और वित्तीय संसाधनों का अधिकतम प्रयोग किया जाना सुनिश्चित किया जा सकता है।

18. वित्तीय रूप से साक्षर प्रतीत होने वाले समूह भी कुछ मूलभूत धारणाओं को पूरी तरह से नहीं समझ पाए हैं जिसके कारण अत्यधिक जोखिम की कल्पना की जाती है। व्यापक रूप से फैली वित्तीय मामलों की अनभिज्ञता से संबंधित जिस उदाहरण का मैं अक्सर जिक्र करता हूं वह तथाकथित 'वित्तीय सलाहकारों' द्वारा स्वर्ण में निवेश के बारे में प्रचारित सिद्धांत है जिसमें कहा गया है कि स्वर्ण में निवेश 'मुद्रास्फीति से सुरक्षा' प्रदान करता है और 'सुरक्षित आस्ति' है। पिछले कुछ वर्षों में स्वर्ण मूल्यों में तेजी से हुई वृद्धि से सिर्फ यह संकेत मिलता है कि स्वर्ण में निवेश करने पर जोखिम बढ़ गया है, जिसे लोग समझ नहीं पा रहे हैं।

वित्तीय साक्षरता का प्रसार कैसे किया जाए

19. मैं अपने अंतिम प्रश्न का रूख करता हूं जो इस बारे में है कि वित्तीय साक्षरता को कैसे बढ़ाएं और इस प्रक्रिया का नेतृत्व कौन करे। जैसा कि मैं पहले ही कह चुका हूं कि वित्तीय साक्षरता अर्थव्यवस्था के प्रत्येक सहभागी के लिए जरूरी है हालांकि इसकी जरूरत अलग-अलग तीव्रता, स्वरूप और मॉड्यूल की होगी।

20. सारे विश्व के देशों ने अन्य के साथ स्कूली बच्चों, शिक्षकों, अनुसंधान संस्थानों को लक्ष्य करके कार्यक्रम बनाया है। इसके अलावा उन्होंने बड़े पैमाने पर मीडिया अभियानों/वेबसाइटों की शुरुआत की है जिनमें अक्सर देशी माध्यमों से सरलीकृत सूचना प्रदान की जाती है जिनका प्रयोग जनता मौद्रिक और बैंकिंग प्रणाली के बारे में जानने के लिए कर सकती है। इस बात को स्वीकार करते हुए कि वैश्विक समस्या से निपटने के

[3] भारत में किस प्रकार से कमाई की जाती है, व्यय किया जाता है और बचत की जाती है -विषय पर मैक्स न्यूयार्क लाइफ-एनसीएईआर अध्ययन 2008.

लिए वैश्विक दृष्टिकोण की जरूरत होती है, ओईसीडी ने विश्व भर के वित्तीय शिक्षा के मामलों से जुड़े नीति निर्माताओं और अन्य हिस्सेदारों के बीच अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ाने के लिए 2008 में वित्तीय शिक्षा के विषय पर अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क स्थापित किया है। वर्तमान में 90 देशों के 200 से अधिक संस्थान ओईसीडी/आईएनएफई से जुड़ चुके हैं।

21. हाथ में लिए गए काम के परिमाण की विशालता के ध्यान में रखते हुए वित्तीय साक्षरता के प्रसार के लिए विभिन्न भागीदारों के प्रयासों के मार्गदर्शन और समन्वय करने करने के लिए मजबूत संस्थागत संरचना का होना लाभकारी है। भारत में हमारे पास वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद (एफएसडीसी) के माध्यम से इस प्रकार की लाभप्रद स्थिति है जिसकी अध्यक्षता केंद्रीय वित्त मंत्री करते हैं और वित्तीय क्षेत्र के विनियामकीय प्राधिकारी इसके सदस्य होते हैं। अन्य बातों के साथ-साथ वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद को वित्तीय समावेशन और वित्तीय साक्षरता के प्रसार का अधिदेश सौंपा गया है। वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद के सदस्य के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करने के अलावा रिज़र्व बैंक ने समर्थनकारी नीतिगत वातावरण तैयार करने और संस्थागत सहायता उपलब्ध कराने -दोनों के संबंध में वित्तीय समावेशन और वित्तीय साक्षरता के प्रसार के लिए बहुत से कदम भी उठाया है।

22. वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद के संरक्षण में भारत से संबंधित राष्ट्रीय वित्तीय शिक्षा योजना (एनएसएफई) तैयार की गई है। योजना के अंतर्गत ये बातें शामिल हैं -जागरुकता उत्पन्न करना और उपभोक्ताओं को वित्तीय सेवाओं तक पहुंचने, विभिन्न प्रकार के उत्पादों और उनकी विशेषताओं की उपलब्धता, जानकारी को जिम्मेदारीपूर्ण वित्तीय व्यवहार में परिणत करने के संबंध में व्यवहार में परिवर्तन लाने और वित्तीय सेवाओं के उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों और दायित्वों का बोध कराना। योजना में लोगों, वित्तीय क्षेत्र के विनियामकों, शैक्षणिक संस्थानों, गैर सरकारी संगठनों, वित्तीय क्षेत्र की संस्थाओं, बहुपक्षी अंतरराष्ट्रीय सहभागियों और केंद्र तथा राज्य -दोनों सरकारों की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता है।

23. इस बड़े शिक्षा अभियान की कार्यनीति के लिए पांच वर्षों की समय सीमा निर्धारित की गई है। कार्यनीति में कहा गया है कि विभिन्न लक्ष्य समूहों को प्रशिक्षित प्रयोगकताओं के माध्यम से वित्तीय शिक्षा दी जाएगी। सीनियर सेकेंडरी स्तर तक के स्कूली पाठ्यक्रम में मूलभूत वित्तीय शिक्षा को शामिल किए जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। यह इस आधार वाक्य के अनुसार है कि वित्तीय शिक्षा के लिए सबसे श्रेष्ठ मार्ग उसे पाठयक्रम की विषय वस्तु में शामिल करना है। तदनुसार हम पाठ्यक्रम निर्धारित करने वाली राष्ट्रीय शैक्षिक और अनुसंधान परिषद (एनसीईआरटी), केंद्रीय सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) जैसे शिक्षा बोर्डों, केंद्रीय और राज्य सरकारों जैसी संस्थाओं के साथ संपर्क कर इस प्रकार की धारणाओं को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल किए जाने का प्रयास कर रहे हैं।

24. इसके साथ ही कार्ययोजना का लक्ष्य प्रारंभ में 500 मिलियन प्रौढ़ लोगों से संपर्क करके उन्हें मुख्य बचतों, संरक्षण और निवेशे से संबंधित उत्पादों के बारे में शिक्षित करना है ताकि वे विवेकपूर्ण वित्तीय निर्णय लेने में सक्षम बन सकें। इसके अंतर्गत उपभोक्ता संरक्षण और देश में उपलब्ध शिकायत निवारण तंत्र की जानकारी भी प्रदान की जाएगी। उक्त सभी उपाय गैर सरकारी संगठनों, सिविल सोसायटी जैसे विभिन्न साझेदारों के माध्यम से पूरे किए जाएंगे और इसमें जन संचार के सभी उपलब्ध माध्यमों का प्रयोग किया जाएगा। वित्तीय शिक्षा को बढ़ाने के प्रथम कदम के रूप में देश में वित्तीय शिक्षा की आवश्यकता के बारे में समग्र मूल्यांकन उपलब्ध कराने के लिए राष्ट्रीय वित्तीय शिक्षा योजना के अंतर्गत एक राष्ट्रीय सर्वेक्षण किए जाने की योजना है।

25. भारत में वित्तीय रूप से विलग बहुत से लोगों को औपचारिक वित्तीय प्रणाली से जोड़ने की चुनौती है इसलिए आधार स्तर पर हमारी कार्यनीति का लक्ष्य मूलभूत वित्तीय उत्पादों के बारे में जागरुकता उत्पन्न करना है। भारत में वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए रिज़र्व बैंक और अन्य साझेदारों द्वारा उठाए गए कदम निम्नानुसार हैं -

- **भारतीय रिज़र्व बैंक** के उच्चाधिकारियों द्वारा पिछड़े गांवों में आउटरीच मुलाकात : इन मुलाकातों का उद्देश्य वास्तविक स्थिति को समझना, औपचारिक वित्तीय प्रणाली से जुड़ने से होने वाले लाभों के बारे में जागरुकता का विकास करना और भारतीय रिज़र्व बैंक की कार्यप्रणाली के बारे में सूचना का प्रसार करना है।
- **भारतीय रिज़र्व बैंक की वेबसाइट** - भारतीय रिज़र्व बैंक की वैबसाइट में वित्तीय शिक्षा के विषय पर एक लिंक उपलब्ध कराया गया है जिसमें बच्चों के लिए मुद्रा और बैंकिंग विषय पर कॉमिक पुस्तकें, फिल्में, वित्तीय

योजना बनाने के विषय पर संदेश, वित्तीय शिक्षा पर आधारित खेल के विषय में जानकारी अंग्रेजी, हिंदी और 11 स्वदेशी भाषाओं में उपलब्ध कराए गए हैं और बैंकिंग ऑम्बुड्समैन योजना के मूल्यांकन के संबंध में भी एक लिंक उपलब्ध कराया गया है।

- **जागरुकता** - प्रचार-पुस्तिका, कॉमिक पुस्तकें बांटना, नाटकों और लघु-नाटिकाओं का प्रदर्शन करना, स्थानीय मेलों और प्रदर्शनियों में स्टॉल लगाना, प्रेस द्वारा आयोजित किए जाने वाले सूचना/साक्षरता कार्यक्रमों में भाग लेना। विद्यार्थियों और नए व्यवसायिक लोगों के लिए वित्तीय योजना तैयार करने के विषय पर पुस्तकों भी जारी की गई हैं।
- **विभिन्न बैंकों ने वित्तीय साक्षरता केंद्रों** (एफएलसी) की स्थापना की है जिनके अंतर्गत वित्तीय साक्षरता का प्रसार करने, वित्तीय उत्पादों के बारे में जागरुकता उत्पन्न करने और बैंकों के ग्राहकों के लिए काउंसिलिंग की सुविधाओं के प्रावधान पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। 30 सितंबर 2012 की स्थिति में देश में 575 वित्तीय साक्षरता केंद्र थे।
- टियर II के अंतर्गत आने वाले और छोटे शहरों सहित देश भर में टाउनहाल कार्यक्रमों का आयोजन करना जिनमें वाणिज्य बैंकों और अन्य साझेदारों के बीच सहयोग बढ़ता है।
- वित्तीय साक्षरता गतिविधियों के लिए मिंट रोड स्थित रिज़र्व बैंक का न्यूजिबिशन वित्तीय साक्षरता गतिविधियों का केंद्र बिंदु बन गया है जिसमें वित्तीय साक्षरता से जुड़ी सभी गतिविधियां प्रत्येक केंद्र से आकर एक साझा फोरम में जुड़ जाती हैं।
- सामान्य जनता में मुद्रा और बैंकिंग के बारे में जागरुकता लाने और मुद्रा के इतिहास के बारे में ज्ञान फैलाने के लिए रिज़र्व बैंक द्वारा मौद्रिक संग्रहालय की स्थापना।
- उत्तर-पूर्वी राज्यों में चलित वित्तीय साक्षरता वैनों का प्रयोग।
- सरकार द्वारा प्रायोजित विभिन्न स्वरोजगार योजनाओं के बारे में जागरुकता कार्यक्रमों का आयोजन करना जिनमें बैंक ऋण तथा केवीआईसी, डीआईसी और अजा/जजा निगमों जैसी सरकारी ऐजेंसियों द्वारा दी जाने वाली छूट के बारे में जानकारी दी जाती है।
- मास मीडिया अभियानों के लिए शैक्षणिक संस्थाओं से गठजोड़ करना, गैर सरकारी संगठनों, वित्तीय बाजार के प्रतिभागियों आदि द्वारा वित्तीय साक्षरता के विषय पर वित्तीय जागरुकता कार्यशालाओं/हैल्पलाइन का आयोजन करना, किताबें, प्रचार-पुस्तिकाएं आदि प्रकाशित करना।
- विशाल संख्या वाले स्वयं सहायता समूहों को नजदीक से उचित सहयोग प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय आजीविका कार्यक्रमों के लिए फील्ड में कार्य करने के लिए बहुत से लोग जुड़े हैं।
- बैंकों/राज्य स्तरीय बैंकों की समितियों की बहुत सी वेबसाइटों/पोर्टलों बैंकिंग सेवाओं के माध्यम से बैंकिंग सेवाओं का विस्तार हो रहा है।
- **ग्रामीण स्व-रोजगार प्रशिक्षण संस्थाओं** के द्वारा वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों का आयोजन।

26. हमारे वित्तीय शिक्षा के उपायों की कार्यनीति में 'कम उम्र में सिखाओ' की नीति के अनुसरण में रिज़र्व बैंक ने 2012 में भारतीय रिज़र्व बैंक प्रश्नोत्तरी (आरबीआईक्यू) के नाम से एक अखिल भारतीय अंतर विद्यालय प्रश्न मंच प्रतियोगिता की शुरुआत की है। यह प्रश्नोत्तरी रिज़र्व बैंक और देश भर के विद्यालयों में भर्ती युवा विद्यार्थी जगत के बीच 'संबंध' स्थापित करने के अलावा बैंकिंग और वित्त, अर्थशास्त्र, समसामयिक घटनाओं आदि के बारे में रिज़र्व बैंक के इतिहास और भूमिका के बारे में जागरुकता और संवेदीकरण के माध्यम से वित्तीय शिक्षा का प्रसार करने के लिए प्रभावी मंच साबित हो रहा है।

27. वित्तीय साक्षरता की पहल के अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोणों से कुछ प्राप्त करने के प्रयासों के हिस्से के तहत रिज़र्व बैंक विश्व बैंक, ओईसीडी के साथ में अगले महीने नई दिल्ली में वित्तीय शिक्षा के विषय पर क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन कर रहा है। यह सम्मेलन योजना बनाने और वित्तीय शिक्षा कार्यक्रमों को लागू करने की क्षमता को मजबूत करने के लिए जानकारी का प्रसार करने और वित्तीय शिक्षा और शिक्षा ट्रस्ट निधि के माध्यम से विश्व भर में आयोजित किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों का हिस्सा है जिनका प्रबंध विश्व बैंक और ओईसीडी द्वारा किया जाता है।

28. विभिन्न साझेदारों द्वारा उनकी वित्तीय शिक्षा से संबंधित पहलों के माध्यम से प्रसारित किए जाने वाले संदेशों का मानकीकरण करना राष्ट्रीय वित्तीय शिक्षा योजना के उद्देश्यों में से एक है। राष्ट्रीय वित्तीय शिक्षा योजना के मसौदा दस्तावेज में कुछ सरल संदेशों को चिह्नित किया गया है जैसे बचत क्यों करें, निवेश क्यों करें, बीमा क्यों कराएं, बचत को बैंकों में जमा क्यों करें, उधार अपनी सीमा में क्यों लें, ऋण समय पर क्यों चुकाएं, आय उत्पादक उद्देश्यों के लिए उधार क्यों लें, ब्याज दर क्या है और साहूकार किस प्रकार से बहुत अधिक ब्याज दर लगाते हैं, आदि। यह एक सुपरिचित तथ्य है कि लक्षित लोगों तक विभिन्न श्रोतों के माध्यम से पहुंचने वाले संदेशों की एकरूपता सुनिश्चित करने तथा उनको और अधिक लक्ष्योन्मुखी और शक्तिशाली बनाने के लिए मानकीकरण से मदद मिलेगी।

29. 31 जनवरी 2013 को रिज़र्व बैंक ने अपनी वेबसाइट पर समग्र वित्तीय साक्षरता गाइड जारी किया है और बैंकों को सूचित किया गया है कि वित्तीय उत्पादों और सेवाओं के बारे में मूलभूत धारणात्मक समझ देने के लिए इसे मानक पाठ्यक्रम की तरह प्रयोग करें। वित्तीय साक्षरता गाइड में प्रशिक्षकों के लिए दिशानिर्देश संबंधी नोट, वित्तीय साक्षरता कैंपों के आयोजन के लिए प्रचालनात्मक दिशानिर्देश और पोस्टर सहित वित्तीय साक्षरता संबधी सामग्री शामिल की गई है। इस गाइड में लक्षित लोगों को वितरित किए जाने के लिए वित्तीय दैनंदिनी (डायरी) भी शामिल है ताकि वे लोग वित्तीय योजना की दिशा में पहले कदम के रूप में अपनी आय और व्यय का रिकार्ड रख सकें।

30. मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि माइक्रोसेव द्वारा किए गए आकलन सर्वेक्षण में अधिकांश संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रमों को लक्षित जनसंख्या ने पसंद किया है और उनके ज्ञान में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सफल रहे हैं। मैं सर्वेक्षण के इस प्रेक्षण से सहमत हूं कि वित्तीय साक्षरता और वित्तीय समावेशन की पहलों को और अधिक एकीकृत करने की आवश्यकता है। हमारा अनुभव भी यही दर्शाता है कि ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं और किसी एक में कमी होने से दूसरे का प्रभाव कम हो जाता है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा तैयार किए गए वित्तीय साक्षरता के अध्ययों को केंद्रीय सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड/राष्ट्रीय शैक्षिक और अनुसंधान परिषद के माध्यम से विद्यालयों के पाठ्यक्रम में शामिल किए जाने के सुझाव के बारे में वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद की उप-समिति के भीतर हमारा अनुभव यह रहा है कि वित्तीय शिक्षा को विद्यालयों के वर्तमान पाठ्यक्रम में शामिल किए जाने की आवश्यकता है। इस संबंध में काफी कार्य केंद्रीय सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड/राष्ट्रीय शैक्षिक और अनुसंधान परिषद के साथ में वित्तीय स्थिरता और विकास समिति के संरक्षण में किया जा चुका है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम से इस संबंध में सुझावों/सहयोग का हम स्वागत करेंगे।

उपसंहार

31. कार्य की विशालता के मद्देनजर देश भर में बहुत से उपाय किए गए हैं और किए जा रहे हैं किंतु काफी काम किया जाना अभी बाकी है। वित्तीय साक्षरता के विस्तार के लिए सरकार और विनियामक संस्थाओं के अलावा सिविल सोसायटी और अन्य साझेदारों के भी इससे जुड़ने की जरूरत है। स्कूली बच्चों और वयस्क जनसंख्या को लक्ष्य करके हमें सुस्पष्ट नीतियां बनाने की जरूरत है। हम अभी भी स्कूलों के लिए औपचारिक पाठ्यक्रम तैयार कर रहे हैं जो स्कूली बच्चों को मुद्रा, ऋण, बचतों और निवेशों के बारे में शिक्षित करे और हमारी वित्तीय प्रणाली की कार्यप्रणाली से अवगत कराए। वैसे तो लक्षित कार्यक्रम एक बार के लिए उपयोगी होते हैं। हमारी भावी पीढ़ियों को वित्तीय साक्षर बनाने के लिए स्कूली पाठ्यक्रम में वित्तीय शिक्षा को निरंतर शामिल करना मुख्य बात होगी। वित्तीय साक्षरता के लिए किए गए प्रयासों के माध्यम से गरीबों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने के योगदान के लिए मैं संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक और माइक्रोसेव को बधाई देता हूं। हालांकि, वित्तीय साक्षरता से अनभिज्ञता की व्यापक उपस्थिति से हमें इस दिशा में बहुत सा काम करने की जरूरत होने का संकेत मिलता है।

32. वित्तीय साक्षरता के महत्त्वपूर्ण विषय पर अपने विचार रखने का अवसर प्रदान करने के लिए इस कार्यशाला के आयोजकों को मैं एक बार फिर से धन्यवाद प्रेषित करता हूं। नए विचारों की उत्पत्ति और विभिन्न साझेदारों के बीच विचारों की स्पष्टता उद्देश्यों को प्रसारित करने के लिए इस प्रकार के सम्मेलन महत्तवपूर्ण हैं। पिछले दिसंबर को मैंने वित्तीय समावेशन के विषय पर एक सेमीनार में संबोधन प्रस्तुत किया था। उस संबोधन से सम्मेलन के प्रतिभागियों से सकारात्मक प्रभावों के बारे में प्राप्त हुए फीडबैक मैं आपके साथ साझा करना चाहता हूं। मुझे ज्ञात हुआ है कि सम्मेलन के दौरान नया खाता खोलने के लिए हाल के केवाईसी मानकों में दी गई छूट

के विषय में उत्पन्न हुई जागरुकता के आधार पर असंगठित क्षेत्र के सीमांत और प्रवासी कामगारों के खाता खोलने और इस माध्यम से उनको विभिन्न वित्तीय सेवाएं सुलभ कराने के संबंध में बैंकों की तत्परता में प्रत्यक्ष सुधार हुआ है। सेमीनार से जो संदेश मिला उसके कारण जोश से भरकर आयोजकों ने बहुत से कैंप आयोजित किए जिनमें काफी बड़ी संख्या में बैंक खाते खोले गए। आने वाले दिनों में वे इस तरह के बहुत से कैंप आयोजित करने की योजना बना रहे हैं। मैं आशा करता हूं कि आज की इस कार्यशाला का भी यहां उपस्थित प्रतिभागियों पर उसी तरह का प्रभाव होगा।

धन्यवाद।